Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य्य समाज चावड़ी बाजार देहली अर्द्धशदाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में

* ओ३म् *

वेद वेदाङ्ग

अर्थात्

(चारों वेद और उनके अङ्गोपाङ्ग तथा

उनकी ११३१ शाखायें)

लेखक—

विद्याभूषण श्री पं० सुरेन्द्र शर्म्मा गौरः

काव्य-वेदतीर्थ, साहित्योपाध्यायादि

आर्य्योपदेशकं

आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार, देहली।

प्रथम वार] २८ जनवरी १९३५ ई० [मूल्य -)॥

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

यदि आर्य्य समाज संस्थाओं के जटिल जाल से बच कर अपनी शक्ति का समष्टि रूप से १०० वाँ भाग भी वैदिक आर्ष दयनीय साहित्य की रक्षा, वृद्धि तथा प्रचारार्थ व्यय करने लग जाय तो निश्चय है कि इस साहित्य की रक्षा भी हो सकती है और इस से संसार का भला भी हो सकता है।

देर से इस विषय पर कुछ लिखने का विचार था सो आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार देहली के अर्द्ध शताब्दी महोत्सव पर यही छोटी सी भेंट आपकी सेवा में उपस्थित है। इस में दिए हुए पते तथा मन्त्रादि की संख्याओं में शीघ्रता में जो कुछ भी भूल रह गई हो उसे सुधार लीजिए। और अपनी सुसम्मति के साथ सूचित करने की भी कृपा कीजिए।

विदुषामनुचरः—

सुरेन्द्र शर्म्मा गौरः, काव्य-वेद तीर्थ

आर्य्योपदेशक देहली,

१६—१—३५ ई० शनिवार

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद-वेदाङ्ग

परमात्मा ने ही इस जगत को बनाया है और उसी ने मनुष्यों की सब प्रकार की उन्नति के लिये अपना ज्ञान—वेद भी प्रदान किया है। ईश्वर ने ऋग्वेदादि चारों वेद आदि काल में ही अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार मुक्तात्मा ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित किये हैं। उन से ब्रह्मादि ऋषि मुनियों ने प्राप्त किए और इस श्रवण परम्परा से ही वेदों का दूसरा नाम श्रुति भी प्रसिद्ध है।

सृष्टि उत्पत्ति प्रकरण में

वेदोत्पत्ति के लिए वेदों में अनेक प्रमाण भूत मन्त्र मिलते हैं—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्माद जायत ॥

ऋ० १०। ९०। ९। यजु० ३१। ७। अथ० का० १९। सू० ६। १३॥

अर्थ—

तस्मात् = उस (पूर्ण)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञात् = अत्यन्त पूजनीय
सर्वहुतः = जिस के लिए सब लोग समस्त पदार्थों को देते या समर्पण करते हैं, उस परमेश्वर से
ऋचः = ऋचायें—ऋग्वेद
सामानि = साम मन्त्र—सामवेद
जज्ञिरे = उत्पन्न होते हैं।
तस्मात् = उस परमात्मा से ही
छन्दांसि = अथर्व वेद
जज्ञिरे = उत्पन्न होता है और
तस्मात् = उस पुरुष—परमेश्वर से ही
यजुः = यजुर्वेद
अजायत = उत्पन्न होता है।

हे मनुष्यो! तुम उस परमेश्वर को भली भाँति समझो क्योंकि वही ईश्वर सब प्रकार के ज्ञान विज्ञान का मूल है। यह मन्त्र ज्यों का त्यों यजुर्वेद अ० ३१ मन्त्र ७ में तथा ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ९० । मन्त्र ९ तथा अ० १९ । ६ । १२ में आया है और—

यस्माद्दचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्। सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदे-व सः॥

(अथ० कां० १०। सू० ७। मं० २०)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ—

यस्मात् = जिस परमेश्वर से
ऋचः = ऋचायें (ऋग्वेद)
अपातक्षन्= उत्पन्न हुआ है।
यजुः = यजुर्वेद
यस्मात् = जिस भगवान से
अपाकषन्= प्रादुर्भूत हुआ और
सामानि = साम मन्त्र (सामवेद)
यस्य = जिस ईश्वर के लोम सदृश है। अर्थात् शरीर से जैसे लोम बाहिर निकलआते हैं वैसे ही जिस प्रभु से सामवेद लोमवत् प्रकट हुआ है। उसी परमात्म देव से
आंगिरसः= अथर्ववेद भी प्रकट हुआ है।
मुखम् = अथर्ववेद जिसका मुखवत् है।
कतमः = कौनसा
स्विदेवः = देव
सः = वह है ?
तम = उस को
ब्रूहि = कहो

इस प्रश्न का उत्तर वेद ने स्वयं ही यह दिया है कि—

वह परमात्मा देव है कि जिस ने ऋग्वेदादि चारों वेद उत्पन्न

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रकट) किए और सर्व जगतको उत्पन्न कर के धारण कर रहा है वह ईश्वर—स्कम्भम्=सर्व संसार का धारक है।

इस मन्त्र में अथर्ववेद के लिए—"अथर्वाङ्गिरसः" ऐसा विस्पष्ट नाम आया है और कहीं २ पर अथर्ववेद के लिए केवल छन्द शब्द का ही प्रयोग किया गया है। जैसे—

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दां सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत॥

(अथ० कां० १९। सू० ६। मं० १३)

इस मन्त्र का अर्थ वही है जोकि ऊपर के मन्त्रार्थ में दिया जा चुका है। यहां इस मन्त्र में आए हुए (छन्द) शब्द से अथर्ववेद का ही ग्रहण किया गया है।

"यज्ञो वै विष्णुः" विष्णुः व्यापक ईश्वरः।

(श० १। १। १। १३)

यज्ञ नाम विष्णु-व्यापक भगवान का है।

वेद परमात्मा का ज्ञान (गुण) है। और भगवान नित्य है अतः उसका गुण-ज्ञान वेद भी नित्य ही है। वेद वैसे उत्पन्न तो नहीं होता किन्तु कल्प के आदि में उसे ईश्वर प्रकट कर देता है। और प्रत्येक कल्प के आदि में ही एवं इसी प्रकार से तथा इन्हीं चारों वेदों का प्रकाश मनुष्यों के कल्याणार्थ परमेश्वर किया करता है। ऐसा वैदिक सिद्धान्त है।

वेद नित्य हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस के लिए वेदान्त दर्शन अ० १। पाद ३। सूत्र २९ में कहा है कि—

अतएव च नित्यत्वम् ॥

अर्थात्—प्रत्यक्षानुमानादि सब प्रमाण, शब्द प्रमाणभूत वेद के सहायक हैं अतएव वह वेद खण्डित न होने से नित्य है।

इसी प्रकार से—

न पौरुषेयत्वं तत्कर्तुः पुरुषस्याऽभावात् ॥

(सांख्य दर्शन अ० ५। सूत्र ४६ ॥)

में भी कहा है कि वेदों को किसी मनुष्य ने नहीं बनाया है अतः वेद अपौरुषेय—ईश्वरोक्त और नित्य हैं।

विष्णु पुराण अ० ६। (श्लोक) में भी वेदों का ईश्वरोक्त होना तथा नित्य कहा है। जैसे—

नैव वेदाः प्रलीयन्ते, महाप्रलयेऽपि वैतत्। प्रजापत्या श्रुतिर्नित्या तद् विकल्पा स्त्वमे द्विज ! ॥

(विष्णु पुराण। अ० ६।)

हे द्विज ! ये शाखायें तो ऋषि प्रणीत एवं श्रुति (वेद) के विकल्प (व्याख्यान) मात्र हैं। किन्तु प्रजापति-परमात्मा की ओर से प्रकाशित श्रुति (वेद) तो महा प्रलयकाल में भी कभी नष्ट नहीं होती है अतः श्रुति (वेद) नित्य ही हैं।

ऐसा ही अन्यत्र भी लेख है कि—

स्वयम्भुरेव भगवान् वेदो गीतस्त्वयापुरा। शिवाद्या

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषि पर्यन्ताः स्मर्त्तारोऽस्य न कारकाः

वेद तो स्वयंभू परमात्मा ने ही आदि काल में उच्चारा है और शिव आदि ऋषि तो वेदों के स्मरण-कर्त्ता ही हैं। ऋषि-मुनि जन वेदों के बनाने वाले नहीं हैं।

इस प्रकार से वेद से लेकर पुराण तक प्रत्येक साहित्य में वेदों के ईश्वरोक्त, नित्य एवं आदि काल में ही प्रकट होने के आवश्यकता से भी अधिक प्रमाण भरे हुए हैं।

प्रश्न—यदि वेद परमेश्वर का ही ज्ञान है तो उसने वेदों को कैसे प्रकट किया?

उत्तर—ऋगादि चारों वेद ईश्वर ने सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा नामक चार मुक्ति से लौटे हुए ऋषियों के अन्तःकरण में प्रकाशित किये थे।

जैसा कि शतपथादि में लिखा है कि—

अग्निने ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः

अर्थ— (श० ११। ४। २। ३॥)

अग्नि ऋषि के द्वारा ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और आदित्य ऋषि से सामवेद तथा अंगिरा ऋषि के द्वारा अथर्ववेद ईश्वर ने प्रकट किया है।

प्रश्न—वेद कब प्रकट हुए?

उत्तर—वेद सृष्टि के आदि में मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर ने प्रकट किए हैं जिनको १९७२९४९ ३५ वर्ष बीत

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके हैं। ज्योतिष में सृष्टि को आयु की गणना में १४ मन्वन्तर और १५ संधियां मानी हैं। १ मन्वन्तर ३०६७२०००० वर्षों का और १ संधि १७२८००० वर्षों की मानी गई है। इस सृष्टि की आयु में ६ मन्वन्तर और ७ संधियां बीत चुकी हैं और यह सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है जिसके २८ वें चतुर्युग में इस कलियुग के भी ५०३५ वर्ष बीत गए हैं।

कई पौराणिक भाइयों का विचार है कि चारों वेद ब्रह्मा के चारों मुखों से ही प्रकट हुए हैं परन्तु उन का यह विचार शुद्ध नहीं है क्यों कि चार मुख युक्त कोई भी मनुष्य न कभी हुआ, ही है, और न कभी हो ही सकता है। सृष्टि नियम विरुद्ध बातों पर न जाने क्यों कर पौराणिक भाई विश्वास किये हुए हैं ? मनुष्य शरीर का वर्तमान में जो चित्र (नकशा) है वही आदि काल से चला आता है और अन्त तक ज्यों का त्यों बना भी रहेगा। अतः चतुर्मुख ब्रह्मा की कल्पना को तो केवल कल्पित ही समझना चाहिये।

किन्तु हां—चतुर्वेद वेत्ता विद्वान् गौणिक रूपेण अवश्य ही ब्रह्मापद वाच्य हो सकता है। वैसे ईश्वर का भी ब्रह्मा नाम है ही लेकिन चार मुख युक्त शरीरधारी कोई व्यक्ति इस ब्रह्मा नाम का न था ही और न सृष्टि नियम विरुद्ध कोई ऐसा मनुष्य हो ही सकता है। मनु महाराज ने भी कहा है कि—

अग्नि वायु रविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुदोह यज्ञ सिद्धयर्थं मृग्यजुः साम लक्षणम् ॥"
॥ १ । २३ ॥

अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा के द्वारा चारों वेद यज्ञादि की सिद्धि के लिये ब्रह्मा आदि ऋषि मुनियों ने प्राप्त किये हैं।

ऋग्वेदः—

"अग्नेर्ऋग्वेदः" अर्थात् अग्नि ऋषि के द्वारा ईश्वर ने ऋग्वेद प्रकट किया है। अजमेर वैदिक यन्त्रालय में छपे हुए ऋग्वेद की मन्त्र संख्या निम्नलिखित है। ऋग्वेद में ऋषि दयानन्द सम्मत—

कुल १०५२१ मन्त्र हैं। ८५ अनुवाक और १०२८ कुल सूक्त हैं। इसे समझनेके लिये नीचेका चित्र ध्यानसे पढ़िये—

मण्डल	अनुवाक	सूक्त	मन्त्र
(१)	२४	१९१	१९७६
(२)	०४	०४३	०४२९
(३)	०५	०६२	०६१७
(४)	०५	०५८	०५८९
(५)	०६	०८७	०७२७
(६)	०६	०७५	०७६५
(७)	६	१०४	४१
(८)	१०	१०३	१७२६
(९)	०७	११४	१०९७
(१०)	१२	१९१	१७५४
१०	८५	१०२८	१०५२१

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋग्वेद में छन्दानुसार मन्त्र—

छन्द संख्या	मन्त्र संख्या	छन्द
(१)	२४५१	गायत्री
(२)	०३४१	उष्णिक
(३)	०८५५	अनुष्टुप्
(४)	०१८१	वृहति
(५)	०३१२	पंक्ति
(६)	४२५३	त्रिष्टुप्
(७)	१३४८	जगति
(८)	००१७	अतिजगति
(९)	०००९	शक्करी
(१०)	०००९	अतिशक्वरी
(११)	०००६	अष्टि
(१२)	००८४	अत्यष्टि
(१३)	०००२	धृति
(१४)	०००१	अति धृति
(१५)	००१७	द्विपदा
(१६)	०००६	एक पदा
(१७)	०१९४	बार्हत प्रगाथ
(१८)	००५५	ककुप् प्रगाथ
(१९)	०००१	महा बार्हत प्रगाथ
	१०१४२	

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि प्रकार से छन्दानुसार भी ऋग्वेद की मन्त्र संख्या जाननी चाहिए।

अनुक्रमणिका के अनुसार ऋग्वेद में शाकल्य शाखानुसार १०१७ और वाष्कल शाखा में १०२५ सूक्त हैं।

१०५८० मन्त्र इन में माने गये हैं जिनके १५३४२६ शब्द और ४३३००० अक्षर कहे जाते हैं। ऋग्वेद में मण्डल तथा सूक्त का विभाग करने वाला शाकल ऋषि कहा जाता है। और अष्टक, अध्याय व वर्ग का विभाग कर्त्ता वाष्कल ऋषि प्रसिद्ध है।

ऋग्वेद के ब्राह्मण

अनेक ब्राह्मणों में से ऋग्वेद के दो बड़े भारी ब्राह्मण हैं जिन में से प्रथम ऐतरेय ब्राह्मण है। इसमें ४० अध्याय और ८ पञ्चिका हैं। ऋग्वेद का दूसरा कौषीतकी ब्राह्मण है।

ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद कहा जाता है जिसको वैद्यक शास्त्र भी कहते हैं। इस में धन्वन्तरि कृत सुश्रुत और निघण्टु तथा पतञ्जलि ऋषि कृत चरक आदि आर्ष ग्रन्थ माने जाते हैं।

ऋग्वेद की २१ शाखायें हैं।

यजुर्वेदः —

"वायोर्यजुर्वेदः" श० ११। ४। २। ३॥

ईश्वर ने वायु ऋषि के द्वारा यजुर्वेद प्रकाशित किया है। इसमें ४० अध्याय और कुल १९७५ मंत्र हैं।

यज्ञ कल्पतरू नामक ग्रन्थ में ऐसा लिखा है कि—

"सन्मूलो यजुराख्यवेदविटपो, जीयात्स माध्यन्दिनिः।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखा यत्र युगेन्द्रकाण्डसहिता यत्रास्ति सा संहिता ॥
यत्राऽभ्राब्धि लता विभान्ति शरशैलाङ्केन्दुभि र्ऋग्दलैः ।
पञ्च द्वीपु नभोङ्कवर्णमधुपैः खाग्न्यर्कगुं गुञ्जितैः॥१॥
कल्पतरौ ॥

अर्थात्—इस यजुर्वेद कल्प वृक्ष के काण्ड रूपी १४ तो शाखायें हैं। लता रूप ४० अध्याय, पत्ते रूपी १९७५ मन्त्र और भ्रमर रूपी ९०५२५ अक्षर तथा १२३० ४ (गुङ्कार) अनुस्वार रूपी चिन्ह हैं।

वाजसनि, याज्ञवल्क्य के पिता का नाम और माता का वाजसनी था अतः याज्ञवल्क्य का नाम वाजसनेय भी था। उत्तर भारत में इसी याज्ञवल्क्य (वाजसनेय) की शिक्षा के आधार पर वर्तमान प्रचलित शुक्ल यजुर्वेद का वाजसनेय यजुर्वेद या वाजसनेय संहिता भी नाम वैदिक विद्वानों की जानकारी में प्रसिद्ध है। और दक्षिण भारत में दाक्षिणात्य लोगों की शिक्षा-पद्धति में आयं हुए यजुर्वेद का ही दूसरा नाम कृष्ण यजुर्वेद पड़ गया है जो कि त्तित्तिरि ऋषि के द्वारा शिक्षितों में तैत्तिरीय संहिता अथवा कृष्ण यजुर्वेद नाम से प्रसिद्ध है।

वेद के ये शाखा भेद नाम केवल विद्वानों के लिये ही किसी आंशिक रूप में विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। किन्तु सर्व साधारण के लिये तो इतना ही जान लेना पर्याप्त है कि—

यजुर्वेद को भगवान ने आदि काल में वायु ऋषि के द्वारा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट किया है । और इस में प्रधानतया कर्म काण्ड का विधान है ।

यजुर्वेद के ब्राह्मण

कृष्ण यजुर्वेद का तैत्तिरीय ब्राह्मण है जो कि ३ काण्ड युक्त है और जो एक प्रकार से तैत्तिरीय संहिता का दूसरा भाग है ।

दूसरा शतपथ ब्राह्मण है जो कि शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिनी और काण्व दोनों शाखाओं का सम्मिलित ब्राह्मण है । इस में १०० सौ अध्याय हैं ।

यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है जिसमें शस्त्रास्त्र विद्या के प्रतिपादक अंगिरा आदि ऋषि कृत ग्रन्थ थे किन्तु शोक है कि वे ग्रन्थ काल के ग्रास बन कर केवल अपने नाम मात्र ही शेष छोड़ गए हैं ।

यजुर्वेद की १०१ शाखायें मानी जाती हैं ।

सामवेदः

"सूर्यात्सामवेदः" सूर्य्य (आदित्य) ऋषि के द्वारा भगवान ने सामवेद प्रकट किया है । इसमें प्रधानतया उपासना काण्ड का विधान है । अजमेर में छपे हुये सामदेद में कुल १८२४ मन्त्र हैं जिन में से ऋग्वेदादि में आये हुए मन्त्रों को यदि प्रथक कर दिया जाये तो लगभग ८० मन्त्र ही रह जाते हैं ।

सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद है जिसमें नारदीय संहिताऽदि प्रमाणिक पुस्तकें गिनी जाती हैं ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामवेद के ८ ब्राह्मण ग्रन्थ हैं जिनके निम्नलिखित नाम हैं—

(१) प्रौढ़ ब्राह्मण (इसी को पञ्चविंश ब्राह्मण भी कहते हैं)
(२) षड् विंश ब्राह्मण
(३) साम विधान ब्राह्मण
(४) आर्षेय ब्राह्मण
(५) देवताध्याय ब्राह्मण
(६) उपनिषद् ब्राह्मण
(७) संहितोपनिषद् ब्राह्मण
(८) वंश ब्राह्मण

सामवेद की कुल १००० एक सहस्र शाखायें मानी जाती हैं।

अथर्ववेद—"अथर्वाऽङ्गिरसः"

(अ० । १० । ७ । २०)

अर्थात् अंगिरा नामक ऋषि के द्वारा अथर्ववेद ईश्वर ने प्रकट किया है।

इस में २० काण्ड, १११, अनुवाक, ७३१ सूक्त और कुल ५९७७ मन्त्र हैं। अथर्ववेद का प्रसिद्ध गोपथ ब्राह्मण है।

अथर्ववेद का उपवेद अर्थवेद है जिसमें शिल्प-कला कौशलादि का विशेष विधान है और इसमें विश्वकर्मा, त्वष्टा एवं मय कृत संहितायें प्रमाणरूप में मानी जाती हैं। अथर्ववेद की ९ शाखायें मानी गई हैं।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न—वेदों के अंगोपाङ्ग क्या कहलाते हैं ?

उत्तर—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द और ज्योतिष ये वेदों के अंग कहलाते हैं और वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग मीमांसा और वेदान्त ये छः दर्शन ही वेदों के उपांग कहलाते हैं।

वेदों के अंगों के सम्बन्ध में यूँ लेख है—

'छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षु, निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥ १ ॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् सांगमधीत्यैव, ब्रह्मलोके महीयते ॥ २ ॥

अर्थात्—छन्दः शास्त्र (विद्या) तो वेद के पैर हैं और कल्प (कर्म काण्ड की विद्या) वेद के हाथ हैं। इसी प्रकार से ज्योतिष विद्या चक्षु और निरुक्त पदार्थों की निरुक्ति—किस शब्द का क्या अर्थ होना चाहिए। श्रोत्र-कान कहा जाता है। शिक्षा, जो कि उच्चारण की विद्या है वह वेद की नासिका (नाक) और व्याकरण (शुद्धाऽशुद्ध परिज्ञानविद्या) मुख कहा गया है। अतएव वेदों को इन छः अंगों के सहित ही पढ़ कर मनुष्य को मोक्ष तक की समुन्नति करनी चाहिए।

प्रश्न—उपनिषदें कितनी हैं ?

उत्तर—वैसे तो सवा सौ के लगभग हैं किन्तु उनमें से वैदिक सिद्धान्तानुसार परन्तु परतः प्रमाण भूत—

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) ईश
(२) केन
(३) कठ
(४) प्रश्न
(५) मुण्डक
(६) माण्डूक्य
(७) ऐत्तरेय
(८) तैत्तिरीय
(९) वृहदारण्यक
(१०) छान्दोग्य तथा
(११) श्वेताश्वतरोपनिषदें ही उत्तम और प्रामाणिक माननी चाहियें।

प्रश्न—वेद कितने हैं ?

उत्तर—वेद चार हैं।

प्रश्न—यदि वेद चार ही हैं तो फिर जिन प्रमाणों में तीन ही वेदों के नाम आये हैं क्या वे वचन असत्य एवं अमाननीय हैं ? हमतो सदा से वेद तीन ही सुनते आये हैं और प्रमाण भी तीन ही वेदों के लिये मिलते हैं। देखिये क्या लिखा है ?—

(१) "यस्मिन्नृचः साम यजूंषि"
यजु० ३४।५।

(२) "तस्मादृचः साम यजूंषि"
मुण्डक० २।१।६।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) "इममेव लोकमृचा जयति, अन्तरिक्षं यजुषा, दिवमेव साम्ना ।"

॥ श० ४ । ६ । ७ । २

(४) "ऋग्भिरेतं यजुर्भिरन्तरिक्षं सामभिर्यत्तत् कवयो वेदयन्ते ।"

प्रश्नोपनिषद् ५ । ७ ॥

"अग्निवायु रविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् ।
दुदोह यज्ञ सिद्धयर्थं मृग्यजुः साम लक्षणम् ॥

मनु १ । २३ ॥

(६) "सा वा एषा वाक् त्रेधा विहिता, ऋचो यजूंषि सामानि ।"

॥ श० १० । ५ । १ । २ ॥

(७) "ऋचः सामानि यजूंषि साहि श्रीरमृता सताम्" ॥

॥ तै० ब्रा० १ । २ । १ ॥

(८) ऋग्वेद विद्यजुर्वेदविच्च, सामवेद विदेवच ।
त्रयवरा परिषज्ज्ञेया धर्म संशय निर्णये ॥

॥ मनु० १२ । ११२ ॥

इत्यादि अनेकशः प्रमाण मिलते हैं जिनमें तीन ही वेदों के

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम आते हैं और ऋग्, यजुः, साम इन तीन ही का विधि-विधान भी आता है, अतः वेद तीन ही मानने चाहियें।

उत्तर—नहीं भाई! वेद तीन नहीं हैं किन्तु वेद ४ ही हैं और आदि काल से ऋग, यजुः, साम तथा अथर्व वेद, इन्हीं नामों से प्रसिद्ध भी हैं।

आपके संशयोत्पादक जिन उक्त प्रमाणों में जो ३ वेदों का वर्णन है वह उनके संख्या भेद से नहीं है किन्तु विषय भेद से है। वेद संख्या भेद से तो ४ ही हैं किन्तु ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन ही पदार्थ इस संसार में हैं और इन्हीं के आधार पर यह सारा जगत का प्रपञ्च भी है। जब ज्ञेय पदार्थ ही ३ तीन हैं तो ज्ञान भी तीन ही प्रकार का हो सकता है, इसी त्रिविध ज्ञापक ज्ञान भेदसे ही चारों वेदों के लिए त्रिवेद, त्रिविद्या आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है और किया जाता है। चारों वेदों के २०५२१ मन्त्रों में ज्ञान काण्ड, कर्म काण्ड तथा उपासना काण्ड और आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधि-दैविक त्रिविध ज्ञान का ही विधान है। अतः विद्या (वेद) या ज्ञान ३ ही प्रकार का होने के कारण चारों वेदों को त्रिविद्या और त्रिवेद के नाम से भी पुकारा जाता है।

क्या महाभारत में १८ पर्व होने से संख्या भेद से भी १८ महाभारत कहलायेंगे। इसी प्रकार से गीता के १८ अध्याय होने से १८ गीता नहीं कही जाती हैं और भागवत के १२ स्कन्ध होने पर भी संख्या भेद से एक ही भागवत कहा जाता

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। एवं सत्यार्थ प्रकाश में उसके विषय भेद से १४ समुल्लास हैं किन्तु कोई व्यक्ति "सत्यार्थ प्रकाश १४ हैं" ऐसा नहीं कहता है।

ठीक इसी प्रकार से विषय भेद से यदि त्रिविद्या या त्रिवेद का नाम आजाये तो इस से यही समझना उचित है कि चारों वेदों में प्रतिपाद्य विषय ज्ञान ३ तीन ही प्रकार का है।

"ऋचः सामानि यजूंषि" श्रुति आदिमें आये हुए इन बहु वचनान्त पदों से भी यही सिद्ध होता है कि इन से संख्या पर्क-ग्रंथ विशेष का ग्रहण गौणिक रूप में और विषयानुसार मन्त्रों का ही ग्रहण प्रधानता से किया गया है। क्योंकि चारों वेदों में जितने भी मन्त्र हैं वे उक्त "ऋचः सामानि यजूंषि" ३ ही प्रकार के हैं।

चारों वेदों के सब मन्त्रों के प्रथम दो भेद समझने चाहियें—

(१) पद्य (छन्दो बद्ध)

(२) गद्य (छन्दो बन्धन रहित)

इन पद्य भाग में विभक्त मन्त्रों को ऋषियों ने फिर ३ भागों में विभाजित कर दिया है—

(१) जो गाये जाते हैं उनका नाम साम है।

(२) जो यज्ञादिक कर्मों के साथ गौणिक वर्णनात्मक कुछ सम्बन्ध रखते हैं अर्थात् जो गुण विधायक होते हैं उनको ऋचा कहते हैं।

(३) जिनका किसी कर्मकांड में तो विशेषतया कोई विनियोग-सम्बन्ध न हो परन्तु केवल उपदेश मात्र ही हो उनको

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अथर्वाङ्गिरस" मन्त्र कहा जाता है। और—

(४) गद्यात्मक वे मन्त्र होते हैं जो कि पद्य (छन्द) के बन्धन से रहित और प्रधानतया कर्मकाण्ड का क्रियात्मक उपदेश और विधान करते हैं ऐसे मन्त्रों का ही नाम यजु या यर्जुष है।

मीमांसा दर्शन में भी ऋग्यजुः सामादि शब्दों से वेदों की संख्या का ग्रहण न करके उनमें आये हुए मन्त्रों के ही ३ प्रकार (भेद) कहे गये हैं। जैसे—

'तेषामृग् यत्रार्थ वशेनपाद व्यवस्था,

मीमांसा दर्शन २। १। ३५।

अर्थात्—उन मन्त्रों का नाम ऋचा है जिनमें अर्थ के कारण पाद व्यवस्था है। जिन मन्त्रों का अर्थ अधूरा न रहे और एक २ पाद में नियत अक्षर हों—छन्द के प्रकार भेदके नियम से न्यूनाधिक अक्षर न होकर पादों की निश्चित मर्यादा हो उन मन्त्रों का ही नाम ऋचा कहा गया है।

(२) "गीतीषु सामाख्या"

मीमांसा द २। १। ३५॥

जो मन्त्र गाये जाते हैं उनको साम के नामसे कहा जाता है।

(३) "शेषे यजुः शब्दः"

मी०। २। १। ३७॥

ऋचा और साम, भेद से बचे हुए शेष सब मन्त्र यजु

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(यजूँषि) शब्द से ही कहे जाते हैं।

इस से सिद्धि है कि जिन २ प्रमाणों में या वचनों में आये ऋचः सामानि व यजूंषि पद हैं उन शब्दों से संख्या भेद से तीन ही वेदों का ग्रहण न करके चारों वेदों में आये हुए सब मन्त्रों के ही उनके विषय भेद से ये नाम ऋचः सामानि यजूंषि आये हैं। और ऐसा ही समझना भी चाहिए।

वेद संख्या भेद से चार ही हैं इसमें कोई संदेह नहीं करना चाहिये। संख्या भेद से कही जाने वाली बात चीत में सदा से (प्राचीन काल से) ही चार वेद हैं ऐसा केवल विश्वास मात्र ही नहीं है प्रत्युत इसके लिये प्रमाण भी बहुत मिलते हैं। देखिये—

"यस्माद्दचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाक्षन्। सामानि यस्य लोमान्यथर्वाऽङ्गिरसो मुखं स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः"।

अ०। १०।७। २०।

(२) 'तस्माद्यज्ञात्सर्व हुत ऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत" ॥

ऋ०। १०। ९०। ९। यजु ३१।७। अ० १९६। १३॥

वेदों के इन मन्त्रों में चारों वेद ईश्वर से ही प्रकट हुए हैं ऐसा विधान है। और इनमें नाम भी चारों के ही आये हुए हैं। अथर्वाङ्गिरस और छन्दांसि ये दोनों पद अथर्ववेद के ही

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये प्रयुक्त हुए हैं। अतः वेदों के प्रमाण से तो वेद चार हैं ही, इसमें संदेह ही क्या हो सकता है, परन्तु अन्य और माननीय ग्रन्थों में वेदों के चार होने के ही प्रमाण मिलते हैं। देखिये—

(३) "ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थम्"

छान्दोग्योपनिषद् । ७ । १ । २

हे भगवान्! मैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद पढ़ता हूँ (जानता हूँ)।

श्री कात्यायन मुनि कृत सर्वानुक्रमणिका के वृत्तिकार श्री षड्गुरु शिष्य ने अपनी वृत्ति की भूमिका में यूँ लिखा है—

(४) विनियोक्तव्यरूपश्च त्रिविधः सम्प्रदर्श्यते ।

ऋग्यजुः सामरूपेण मंत्रो वेद चतुष्टये ।

अर्थात् जिन मन्त्रों का यज्ञादिक कर्मों में विनियोग किया जाता है वह विनियोक्तव्य रूप, ऋग्, यजुः तथा साम भेद से तीन प्रकार का है और चारों वेदों में है।

इस से तो बिलकुल ही विस्पष्ट हो जाता है कि ऋग्, यजुः, साम से संख्या वाचक ही तीन वेदों का ग्रहण न करके चारों वेदों में आये हुए मन्त्रों का ग्रहण है और वेद भी चार ही हैं।

(५) अरे अस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद् ।

यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः ॥

अरे मैत्रेयी! इस पूजनीय आत्मा का यह निःश्वास है जो

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद है। ऐसा याज्ञवल्क्य ने अपनी भार्या से संवाद में कहा है। इसमें भी चारों वेदों के नाम विस्पष्टतया ही लिखे हुए हैं।

इसी प्रकार से महाभारत में भी चारों ही वेदों का वर्णन आया है—

(६) एकतश्चतुरो वेदान् भारतञ्चैतदेकतः।
पुरा किल सुरैः सर्वैः समेत्य तुलया धृतम् ।१।२६८॥

(७) चतुर्भ्यः सरहस्येभ्यो वेदेभ्यो ह्यधिकं यदा।
तदा प्रभृति लोकेऽस्मिन् महाभारतमुच्यते ॥१।२६९॥

(महाभारत अनुक्रमणिकाऽध्याय में अध्याय १। श्लोक २६८–२६९)

अर्थ—पहिले किसी समय में एक बार देवताओं ने चारों वेदों को एक पलड़े में और भारत को दूसरे पलड़े में रखकर तराज़ू में तोला था॥ २६८॥

सो सार गर्भित चारों वेदों से भारत अधिक भारी निकला तब से ही इस संसार में भारत का नाम महाभारत कहा जाता है॥ २६९॥

भिन्न २ मतानुसार ऋग्वेद की मन्त्रसंख्या—

(१) शौनकाचार्य्य कृत अनुवाकानुक्रमणिकानुसार—

ऋचां दश सहस्राणि ऋचां पञ्च शतानि।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋचामशीतिः पादश्च पारणं सम्प्रकीर्तितम् ॥३७॥

अर्थात्—ऋग्वेद में दश हज़ार पाँच सौ अस्सी और एक पाद (१०५८० ।) मन्त्र हैं।

(२) इसी ग्रन्थ में गायत्री आदि छन्दानुसार जो मन्त्र गणना की है—

एवं दशसहस्राणि शतानां तु चतुष्टयम् ।
ऋचां द्व्यधिकमाख्यातमृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥

तत्वदर्शि ऋषियों ने दश सहस्र चार सौ दो (१०४०२) मन्त्र कहे हैं ।

भिन्न २ मतानुसार ऋग्वेद की मन्त्र गणना का चित्र—

सं०	मन्त्र संख्या	किसके मतानुसार
(१)	१०५८०	अनुवाकानुक्रमणिकानुसार
(२)	१०४०२	छन्दः संग्रहश्लोकानुसार
(३)	१०१४२	गायत्री आदि छन्द गणनानुसार
(४)	१००००(सेकुछअधिक)	श्री सायणाचार्य्य
(५)	१०५२१	ऋषि दयानन्द
(६)	१०४०२	श्री पं० शिवशंकरजी शर्मा काव्यतीर्थ
(७)	१०४५२	पं० जगन्नाथ (सर्वानुक्रमणिका का विवरणकार)
(८)	१०४७२	चरणव्यूह के टीकाकार महीदास
(९)	१०४४२	श्री सत्यव्रत सामश्रमी

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०) १०००० श्री स्वामी हरिप्रसादजी वैदिक मुनि

वेद सर्वस्व के प्रथम भाग पृ० ६५ से ६८ तक उक्त मन्त्र गणना का लेखा श्री स्वामी हरिप्रसादजी वैदिक मुनि लिखित ग्रन्थ से उद्धृत किया गया है। इसमें ऋषि दयानन्द सम्मत १०५२१ मन्त्र संख्या हमने ऋषि के भाष्य में दिये हुए मण्डल व सूक्तों के चिह्नानुसार दिया है। वैसे टोटल में ऋषि भाष्य में १०५८९ मन्त्र संख्या मिलती है जोकि उन्हीं के उक्त मण्डल-सूक्तानुसार मन्त्र संख्या से अशुद्ध होने से हमने छोड़ दी है।

इसी विभिन्नता के कारण सन् १९२९ ई० के मार्च में हमने गुरुकुल कांगड़ी में बैठकर अजमेर में छपे हुये ऋग्वेद की मन्त्र संख्या की पड़ताल की थी और ऋषि दयानन्द लिखित मन्त्र संख्या जहां ऋग्वेद मण्डल आठ की १७२६ थी वहां १७२० थी एवं ९ नवम मण्डल में ऋषि की मन्त्र संख्या १०९७ थी वहां १०५८ निकली और दशम मण्डलमें १७५४ के स्थान १७५५ निकली। आज १६।१।३५ ई० को पुनः १९८३ वि० में छपे हुए वेद से मिलान किया परन्तु फिर भी मन्त्र संख्या ठीक-ठीक न मिली। अष्टम की मन्त्र संख्या १७१७ और नवम मण्डल की १०७३ निकली है।

अतएव मन्त्रों की गणना में जो विभिन्नता विद्वानों ने दिखाई है हमारे विचार में उनके परिगणन में ही कहीं न कहीं भूल रह जाने से ही यह विभिन्नता उत्पन्न हो गई है। और इसमें दूसरे कारणों के साथ २ प्रेस की अशुद्धियां भी एक मुख्य कारण कही

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकती हैं।

छापने की अशुद्धि से कहीं २ पर सूक्त में आए हुए मन्त्रों की वास्तविक संख्या को छोड़कर उसके स्थान में दूसरी संख्या छप गई है जिस से मन्त्र संकलन में संख्या की अशुद्धि हो जाना अनिवार्य हो जाता है। जैसे—

सवस्त् १९८३ वि० में अजमेर, वैदिक प्रेस में छपे हुए ऋग्वेद मण्डल ८। सूक्त ७९ में मन्त्र संख्या ६ के स्थान ३ और सम्पूर्ण सूक्त की मन्त्र संख्या ९ के स्थान में कोई संख्या न देकर वर्ग की ३४ सं० के स्थान पर ९४ लिखा हुआ है। देखो पृष्ठ सं० ४६३। ऐसे ही ४७ सूक्त के १८ मन्त्रों के स्थान में केवल ८ की ही संख्या लिखी है।

ऐसी दशामें जो कोई भी मन्त्र संख्या निकालेगा वह साधारणतया सूक्तांत में दी हुई संख्या को ही जोड़ लेता है और लिख यह देता है कि अमुक वेद में इतने मन्त्र हैं। इसलिए वेदों की वास्तविक मंत्र संख्या जानने के लिए विद्वानों की बताई हुई ही मन्त्र संख्या पर निर्भर न रह कर मूल वेद में स्वयं भी प्रयत्न करके (और वह भी बहुत ही सावधानीके साथ) जाननी चाहिए। ऐसे ही सूक्तों की संख्या भी समझनी चाहिए। जैसे उक्त मण्डल के १२६वें सूक्त की संख्या ११ लिखी है।

अनेक ग्रंथों में वेदों की शाखाओं के सम्बन्ध में यद्यपि कुछ २ मत भेद तो अवश्य ही है तथापि चारों वेदों की शाखाओं के विषय में जो अधिक माननीय निर्णय समझा जाता है

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें से कुछ यहाँ दिया जाता है। किस २ वेद की, किस २ ग्रंथ में कितनी २ शाखायें लिखी हैं, यह समझने के लिए नीचे का चित्र दिया जाता है।

ग्रंथ	ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद	कुल
(१) महाभाष्य	२१	१०१	१०००	९	११३१
(२) चरणशटक	२१	१०१	१०००	९	११३१
(३) सूतसंहिता	२१	१०१	१०००	१५	११३७
(४) स्कंदपुराण	२४	१०१	१०००	१२	११३७
(५) मुक्तिकोपनिषद्	२१	१०९	१०००	५०	११८०
(६) देवी पुराण	१०	८९	१०००	९	११०५
(७) विष्णु पुराण	१५	४२	१०००	९	१०९९
(८) चरणव्यूह परिशिष्ट	५	८९	१०००	९	११००
(९) मार्कण्डेयपुराण	०	०	१०००	०	१०००
(१०) सत्यार्थ प्रकाश	२१	१०१	१०००	९	११३१
(११) कूर्म पुराण	२१	१००	१०००	९	११३०

ऋग्वेद की २१ शाखाओं में से जिनके नाम मिलते हैं—

(१) शाकल (सुप्राप्य है)
(२) वाष्कल (")
(३) तैत्तिरीय
(४) वाजसनेय
(५) कौथुम
(६) राणायन

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) पैप्पलाद

(८) शौनक

चरणव्यूहमतानुसार—

(१) आश्वलायन

(२) शाङ्खायन

(३) शाकल

(४) वाष्कल

(५) माण्डूकेय

चरणव्यूह कर्त्ता श्री व्यासदेव के समय में ऋग्वेद की इन ५ शाखाओं को छोड़ कर शेष लुप्त हो गई थीं।

यजुर्वेद की शाखायें—

महा भाष्य के पस्पशाह्निक में और षड्गुरु शिष्य ने वेदार्थदीपिका की भूमिका में यजुर्वेद की १०१ शाखायें लिखी हैं। सनातन धर्मोद्धार ग्रन्थ में उसके लेखक पं० नकछेद ने ९८ और चरणव्यूहकार ने ८६ लिखीं हैं। इनमें से चरणव्यूह में लिखित शाखाओं के नाम वेद सर्वस्व प्रथम भाग पृ० १३३ पर यूँ लिखे हुए हैं—

"यजुर्वेद संहिता के छयासी ८६ भेद हैं। उनमें चरकों के १२ भेद ये हैं—

(१) चरक, (२) आह्वरक, (३) कठ, (४) प्राच्यकठ, (५) कपिष्ठलकठ, (६) आष्ठलकठ, (७) चारायणीय, (८) वारायणीय, (९) वार्तान्तवेय, (१०) श्वेताश्वतर, (११) औप-

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्यव, और (१२) मैत्रायणीय ।

इनमें से मैत्रायणीय के ७ भेद हैं—

(१) मानव, (२) दुन्दुभ, (३) चैकेय, (४) वाराह, (५) हारिद्रवेय (६) श्याम, (७) श्यामायनीय ।

वाजसनेयों के १७ भेद हैं—

१ जाबाल, २ गौधेय, ३ काण्व, ४ माध्यन्दिन, ५ शापीय, ६ तापनीय, ७ कापाल, ८ पौण्ड्रवत्स, ९ आवटिक, १० परमावटिक, ११ पाराशरीय, १२ वैरेय, १३ वैनेय, १४ औध, १५ गालव, १६ वैजव, १७ कात्यायनीय ।

तैत्तिरीयों के दो भेद हैं—

१ औख्य, २ खाण्डिकेय । इनमे से खाण्डिकेयोंके ५ भेद हैं—

१ आपस्तम्ब, २ बौधायन, ३ सत्याषाढ, ४ हैरण्यकेश, ५ शाट्यायन ।

इन में कठों के ४४ उपग्रन्थ हैं ।

चरक ऋषि के शिष्यों को चरक, वाजसनेय, याज्ञवल्क्य ऋषि के शिष्यों को वाजसनेय तथा तित्तिरी ऋषि के शिष्यों को तैत्तिरीय कहते हैं ।

सारांश में यह कि—

(१) वाजसनेय यजुर्वेद संहिता के १७ भेद हैं । (२) तैत्तिरीय यजुर्वेद शाखा के ६ भेद और (३) चरक यजुर्वेद संहिता-शाखा के ६३ भेद हैं । इन ६३ भेदों में १६ ग्रन्थ तो मुख्य हैं और ४४ उप ग्रन्थ हैं ।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामवेद की १००० शाखाओं में से कुछ के नाम—

"सहस्रवर्त्मा सामवेदः" सामवेद सहस्र शाखा-भेद युक्त है, ऐसे महाभाष्य तथा चरणव्यूह आदि में लेख मिलते हैं इनमें से चरणव्यूह खण्ड ३ में से १६ शाखाओं के नाम वेद सर्वस्व के प्रथम भाग के पृ० १७२ वा १७३ में यूं लिखे हैं—

१ आसुरायण, २ वासुरायण, ३ वार्तान्तवेय, ४ प्राञ्जल, ५ ऋग्घर्णाभेद, ६ प्राचीन योग्य, ७ ज्ञानयोग्य, ८ राणायन।

इनमें से राणायनों के ६ भेद हैं—

१ राणायन, २ शाट्यायन, ३ सत्यबल, ४ खल्वल, ५ महाखल-बल ६ लाँगल ७ कौथुम, ८ गौतम, ९ जैमिनीय।

इस प्रकार से शाखाओं के नामादि के परिज्ञानार्थ हम ने अतीव संक्षेप से जो कुछ भी हमें शीघ्रता में मिल सका है पाठकों के समक्ष में रख दिया है। विद्वानों को वैदिक साहित्य की भी सुध लेनी चाहिये।

अथर्व वेद की शाखायें—

व्यास कृत चरणव्यूह के आधार पर

(१) पैप्पल
(२) दान्त
(३) प्रदान्त
(४) स्नात
(५) सौतन
(६) ब्रह्मदाबल

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) शौनक
(८) देव दर्शत
(९) चरण विद्या

सायण ने अथर्ववेद की भूमिका में यूं लिखा है—

"अथर्ववेदस्य नव भेदा भवन्ति—तद्यथा—पैप्पलादाः, तौदाः, मौदाः, शौनकीयाः, जाजलाः, जलदाः ब्रह्मवदाः, देवदर्शाः चारणवैद्याश्चेति ।'

अर्थात्—अथर्ववेद के ९ भेद हैं—

(१) पैप्पलाद, (२) तौद, (३) मौद, (४) शौनकीय, (५) जाजल, (६) जलद, (७) ब्रह्मवद, (८) देवदर्शी, (९) चारण वैद्य ।

अथर्ववेद की इन ९ शाखाओं में से इस समय शौनक शाखा (शौनक ऋषि कृत) सायण भाष्य सहित छपी हुई मिलती है। और दूसरी पैप्पलाद शाखा संहिता भी यत्र तत्र मिल तो जाती है किन्तु यत्न साध्य है क्योंकि यह छपी हुई नहीं है ।

इन दोनों शाखाओं में मन्त्रों के न्यूनाधिक एवं पाठ भेद के अतिरिक्त और कोई भेद प्रतीत नहीं होता है। इन दो के अतिरिक्त शेष सब शाखायें काल ग्रास बनकर केवल नाम मात्र से ही जीवित हैं आकार से नहीं। शौनक संहिता (शाखा)

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजमेर वैदिक प्रेस की भी छपी हुई मिलती है जोकि मूल मात्र है।

अथर्ववेद की शाखाओं का चित्र –

संख्या	सायणाचार्य	चरणव्यूह	भागवत पुराण
(१)	पैप्पलाद	पिप्पला	पिप्पलायनि
(२)	देवदर्श	दान्ता	देवदर्श
(३)	तोद	प्रदन्ताः	पथ्य
(४)	जलद.	तैताः और इसके दो भेद १—औषा २—कुनच	कुमुद
(५)	ब्रह्मवद	ब्रह्मदापस	ब्रह्मबलि
(६)	जाजल	औताः, इस के भेद १—रासाः २—जायालाः	जाजलि
(७)	शौनकीय	शौनकाः	शौनक (शौनकायिनि)
(८)	मौद	वेदरः	मौदष
(९)	चारणवैद्य	चारण विद्या वभ्र, इसके भेद— (१) सैंधायन (२) आंगिरस (३) शौनक	

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार से जहां २ पर अथर्व वेद की शाखाओं के सम्बन्ध में उनके नामादि के जो भी लेख मिलते हैं उनके आधार पर हमने उक्त चित्र देदिया है। श्री स्वामी हरिप्रसादजी वैदिक मुनि कृत "वेद सर्वस्व" इस विषय में उपादेय ग्रन्थ है। विद्वानों को अवश्य देखना चाहिए। वैदिक साहित्य के विषय में मुनिजी ने प्रशंसनीय पुरुषार्थ किया है।

समाप्तम्

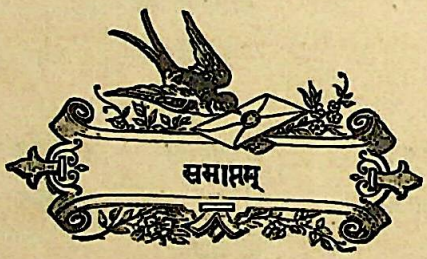

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयंकर तूफ़ान से बचो

नर नारी के हाथ का भूषण और जीवन सर्वस्वका रक्षक

छप गया ! छप गया !!

जीवन का आनंद

(२०×३०, ३२ पेजी के पृष्ठ ४६० का मूल्य ॥।) मात्र)

लेखक—विद्याभूषण— श्री पं० सुरेन्द्र शर्मा काव्य-वेदतीर्थ साहित्योपाध्याय आर्य्योपदेशक—आर्य्य समाज देहली

इस पुस्तक में मनुष्य संसार में रहता हुआ जिन साधनों से जीवन का आनन्द भोग सकता है और जन्म से मरण पर्यन्त किस प्रकार से सुखी एवं सुन्दर जीवन बिता सकता है उन सब सरल तथा मौलिक साधनों का उत्तमता से वर्णन है।

किशोर अवस्था के बाद यौवनागमन के आदि में प्रत्येक नरनारी;—युवक और युवतियों के जीवन काल में महा पराक्रमी—विश्व विजयी पुष्प सायक, रतिपति कामदेव के आक्रमण का एक "भयंकर तूफ़ान"

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठता है जो कि जीवन में उथल पुथल मचा देता है। इस आंधी ने हज़ारों, लाखों ही नहीं किन्तु करोड़ों नर नारियों के जीवन रस को सुखा दिया और अनेकों को अपने आदर्श पथ से कोसों दूर उखाड़ फैंका है। बचपन की अज्ञानता और कुसंग वश से लाखों बालक, बालिकाओं का जीवन अनेक गुप्त एवं भयंकर रोगों से पीड़ित होकर आज संसार में भार रूप बना हुआ है। कौन नहीं जानता कि आज दिन इन रोगों के शिकार हुये अनेक युवक विवाह काल में अपने जीवन को ससार में भार रूप समझते हुए आत्मघात करके जीवन यात्रा को समाप्त कर जाते हैं और अपनी बिलपती हुई सुकुमार पत्नी के वैधव्य जीवन के साथ एक उदाहरण और शिक्षक वर्ग के लिये एक भाव छोड़ जाते हैं। बिचारे अबोध बच्चे क्या करें? न उनको उस तूफ़ान काल में कुछ समझ है और न उससे बचाने के लिये उनके हाथ में कोई ऐसा उत्तम साहित्य ही है। शिक्षक वर्ग और माता पिता आदि भी इस विषय की कोई उत्तम शिक्षा अनुचित संकोच वश, नहीं दे सकते हैं। अतएव इस पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने अपने वर्षों के परिश्रम और अनुभव से इस कमी को दूर करके उन सब शिक्षा और उत्तम साधनों का यथार्थ वर्णन किया है। इसमें स्त्री पुरुषों के गुप्त रोगों का पूरा पूरा इलाज है।

यदि आप अपने जीवन सर्वस्व की रक्षा करके संसार में "जीवन का आनन्द" उपभोग करना चाहते है तो तत्क्षण इस "जीवन का आनन्द पुस्तक को एक बार आवश्य ही आद्योपान्त पढ़ जाइये। इसमें स्वास्थ्य के मुख्य साधन, ब्रह्मचर्य महिमा, प्राणायाम विधि, बिना औषधि के रजवीर्य की रक्षा, शरीर में फैली हुई ७२७२१०२०१ नसनाड़ियों का

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्णन, भयंकर तूफ़ान का समय, नारी रचना, ऋतुमति का समय व कर्तव्य माता के विचारों का संतान पर प्रभाव, विकृत मासिक, आर्त्तव प्रवर्तक औषधि, प्रदर का कारण व चिकित्सा, योनि और उसके आंगोपांग, योनि के रोग, सेवन काल, गर्भाशय, डिम्बप्रणाली, स्त्री के अण्डकोष, डिम्बग्रन्थियां पुत्र व पुत्री होने के कारण, गर्भ न रहने के कारण, १८ प्रकार की बांझें, शुद्ध रजवीर्य की पहचान, गर्भोत्पादक, शर्तिया पुत्र ही हो, गर्भगत संतान को सुन्दर बनाना, गर्भाधान की विधि, प्रसव काल, हिस्टोरिया, स्त्री पुरुषों के अच्छे बुरे की पहिचान, गर्भ निरोधक योग, और पुरुषों के प्रमेह, स्वप्न दोष एवं सब प्रकार के नपुंसकत्व दोष नाशक उत्तम चिकित्सा का वर्णन है। और बुद्धि वर्द्धक, सौन्दर्य बर्द्धक, बालनाशक, विष नाशक अनेक अलभ्य योग लिखे हैं। इसकी एक २ प्रति प्रत्येक नर नारी के हाथमें पहुंचकर उनके जीवन सर्वस्व की रक्षक बनेगी। इसका हमें पूर्ण विश्वास है।

प्रत्येक व्यक्ति इससे अधिक लाभ उठा सके इसीलिए इसका मूल्य भी एक दम घटा दिया है। केवल आधे दाम ॥।) हैं।

पसन्द न होने पर तत्क्षण वापिस करें।

यह पुस्तक विवाह शादी, और वार्षिकोत्सवों पर इनाम व प्रेमोपहार में अपने इष्ट मित्रों को भेंट करके उनका सच्चा उपकार कर सकते हैं और हाई क्लासों के युवक व युवतियों के पाठ्य-कोर्स में रखकर उनके जीवन सर्वस्व की सरलता से ही रक्षा की जा सकती है।

(२) सर्प बिच्छू विष चिकित्सा मू० ≈)॥ इसमें सब प्रकार के सर्प और बिच्छुओं की परिपूर्ण चिकित्सा है।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) वेद में सृष्टि की आयु)॥। इसमें सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का वैज्ञानिक निर्णय है।

पुत्रेष्टि-यज्ञ

ऐतिहासिक दृष्टि से पुत्रेष्टि-यज्ञ एक महत्वशाली विषय है। महाराज राम की उत्पत्ति इसी का फल था। और जहाँ तहाँ इस का महत्व भी सुनते हैं किन्तु इस समय इस विषय की पूर्ण विधि युक्त कोई भी पुस्तक किसी भी भाषा में नहीं मिलती है। अतः हमने इसी त्रुटि का अनुभव करते हुए इसकी पूर्ण विधि को वर्षों के घोर प्रयत्नों से संग्रहीत कर पाया है।

और इसके द्वारा पुत्र निराशियों के घरों में इस समय करांची, देहली, और कलकत्ता आदि स्थानों में पुत्र रत्न भी चमक रहे हैं।

यहां तक कि ६०—६० वर्ष के वृद्धों के यहाँ भी इस विधि के द्वारा पुत्रोत्पन्न हुए हैं।

इसकी एक एक प्रति आप के घर और पुस्तकालय में जाकर एक खटकती हुई कमी को निःसंदेह दूर करेगी। शीघ्र आर्डर भेजिये।

यज्ञोपवीत क्या है ?

यज्ञोपवीत के तीन तारों में विश्व विज्ञान

इसमें यज्ञोपवीत का परिपूर्ण वर्णन है। यज्ञोपवीत क्या है ? इसे क्यों ? और कब पहना जावे ? इसके बनाने की विधि का भेद, वस्तु भेद तथा ३ तारों का वैज्ञानिक वर्णन है। संसार में विस्तृत विज्ञान की शिक्षा

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का तत्व यज्ञोपवीत के ३ तारों के भीतर ऋषियों ने चित्रित कर रक्खा है। इस चित्र को देखिये और विश्व विज्ञान के तत्व को जानिये। यज्ञोपवीत पर जो भी शङ्कायें प्रायः नई रोशनी की चमक में लोग उठाया करते हैं उन सब का पूर्ण समाधान किया गया है। इस विषय से प्रत्येक आर्य्य (हिन्दू) मात्र को अवश्य ही परिचित होना चाहिये। यज्ञोपवीत पहनने के लाभ और न पहनने की हानि को भली भाँति समझाने का यत्न किया गया है।

मिलने के पते—

(१) आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार देहली।

(२) पुस्तक भण्डार गुरुकुल कांगड़ी।

(३) श्रीलाला दीनदयालुजी गुप्त, आर्य्य पुस्तक भण्डार, नई सड़क देहली।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

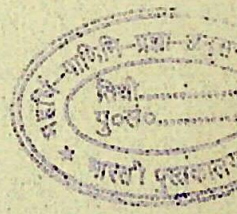

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रक—
पं० शंकरदेव पाठक 'काव्यतीर्थ' शास्त्री,
चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, देहली।

CC-0.In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.